साहित्य, संस्कृति और समाज : विविध आयाम

संपादक
डॉ. यशोदा मेहरा

संकल्प प्रकाशन
कानपुर (उ.प्र.)

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक, संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN 978-93-91435-34-9

प्रथम संस्करण, 2022

© संपादकाधीन

पुस्तक : साहित्य, संस्कृति और समाज : विविध आयाम

संपादक : डॉ. यशोदा मेहरा

प्रकाशक : **संकल्प प्रकाशन**

1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

मूल्य : **₹ 750/-**

पृष्ठ : **232**

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रण : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर-21

16. हिन्दी और उर्दू ज़बान का रिश्ता - मेवाड़ के हवाले से
नूरजहाँ बानो 111
17. मारवाड़ी बोली पर उर्दू जबान के असरात
सुश्री फखरूनिसा बानो 117
18. साहित्य, समाज और वृद्धजन की समस्याएँ
डॉ. अनिता वर्मा 122
19. इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में ''मनुष्य विमर्श'' करती कहानियाँ
डॉ. रामावतार मेघवाल 129
20. किन्नर समाज का दर्द उकेरती 'तीसरी ताली'
डॉ. यशोदा मेहरा 135
21. पारिस्थितिक विमर्श की दृष्टि से रामदरश मिश्र की कहानियाँ
डॉ. अंबिली. टी 141
22. वर्तमान आदिवासी हिंदी कहानियों में अभिव्यक्त आदिवासी स्त्रियों की अस्मिता का संकट और उनका जीवन संघर्ष
पवन कुमार रावत 148
23. अस्मिता मूलक विमर्श केन्द्रित लघुकथाएँ
अनूप कुमार 157
24. दलित आत्मकथा साहित्य और दलित चेतना
पांचू लाल 162
25. हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श
सुश्री रसीला 170
26. समकालीन महिला आत्मकथा-लेखन : शोषण के विविध रूप
डॉ. प्रीति दुबे 178
27. हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श (रेखाचित्र 'सबिया' के संदर्भ में)
डॉ. विजयलक्ष्मी शास्त्री 190
28. हिन्दी साहित्य में समाज और स्त्री-विमर्श
अनिता टॉक 194
29. सूर्यबाला की कहानियों में नारी
डॉ. केतनकुमार. वी.सोलंकी 201
30. मृदुला गर्ग के सामाजिक यथार्थबोध में समाजशास्त्रीय अध्ययन की प्रासंगिकता
रीना राठौर 211
31. संत दादू दयाल की दृष्टि में नारी विमर्श
तरुण पालीवाल 220
32. संत सुन्दरदास के काव्य में सामाजिक सरोकार
डॉ. अनिल कुमार चौहाड़िया, डॉ. अखिलेश चाष्टा 225

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक, संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN 978-93-91435-34-9
प्रथम संस्करण, 2022
© संपादकाधीन

पुस्तक : साहित्य, संस्कृति और समाज : विविध आयाम

संपादक : डॉ. यशोदा मेहरा

प्रकाशक : **संकल्प प्रकाशन**

1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

मूल्य : ₹ 750/-

पृष्ठ : 232

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रण : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर-21

27.

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श

(रेखाचित्र 'सबिया' के संदर्भ में)

डॉ. विजयलक्ष्मी शास्त्री

विमर्श का शाब्दिक अर्थ होता है–विवेचन, समीक्षा, पर्यालोचन या गुण दोष आदि की आलोचना या विवेचना करना तथा तथ्यानुसंधान। जब किसी समूह में किसी विषय पर गहन चिंतन या तर्क वितर्क किया जाता है तो वह विमर्श कहलाता है। स्त्री–विमर्श प्राचीन काल से ही होता रहा है जिसमें स्त्री जीवन के विविध पक्षों पर गहन चिंतन होता रहा है। वैदिक युग से लेकर अब तक जैसे स्त्री विमर्श की एक परंपरा सी चली आ रही है। भारतीय समाज में उपेक्षित वर्ग में दलित के साथ–साथ स्त्री भी रही है। स्त्री को भी दलित ही माना जाता रहा है।

पुरुष प्रधान समाज ने एक तरफ तो स्त्री को देवी का रूप माना तो वहीं दूसरी ओर उसे उपभोग की वस्तु बनाकर रखा। रामायण–महाभारत काल से ही स्त्री की दीन–हीन दशा का अनुमान हो जाता है। रामायण में सीता को घर से निकाल दिया जाता है तो महाभारत में द्रौपदी पाँच पतियों की पत्नी है और उस पर पतियों द्वारा उसे एक वस्तु के रूप में जुआ में दांव पर लगा दिया जाना। तत्पश्चात् 'चीरहरण'। यह स्त्री के प्रति भारतीय पितृसत्तात्मक समाज की कौन सी मानसिकता को दर्शाता है ? क्या 'चीरहरण' की पीड़ा का अनुमान पुरुष समाज लगा सकता है? मध्यकाल में स्त्री की दशा में और पतन हुआ। राजा विलासी जीवन जीते थे। स्त्री पुरुषों के लिए उपभोग की वस्तु बनी रही। कुछ समाज सुधारकों द्वारा स्त्री के जीवन में सुधार लाने हेतु उसकी शिक्षा पर बल दिया गया।

स्त्रियाँ पढ़ने–लिखने और सोचने लगीं। वह धीरे–धीरे आत्मनिर्भर होने लगीं। जो स्त्री सदियों से उपभोग की वस्तु या दासी थी, उसे अब अपने अस्तित्व का ज्ञान होने लगा। परंतु आज भी देश में पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था है। आज भी स्त्री कहीं–न–कहीं अपने अधिकारों व अस्मिता के लिए संघर्ष कर रही है। आज स्त्री हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है किंतु जब भी स्त्री पुरुष प्रधान समाज द्वारा बनाए गए बंधनों को तोड़ने का प्रयास करती है और मुक्त रूप से जीने हेतु अग्रसर होती है तब उसका शारीरिक, मानसिक शोषण

किया जाता है। जब वह स्वतंत्र होकर जीने का प्रयास करती है तब पुरुषवादी मानसिकता उसका और अधिक शोषण, यहाँ तक की बलात्कार करना शुरू कर देता है। जिससे वह भयभीत होकर सामाजिक बंधनों में बंधी रहे, घर से बाहर निकलने का वह सोच ही न सके। यही काराण है कि वह कितनी भी पढ़ी–लिखी क्यों न हो पुरुषवादी समाज व्यवस्था–संस्कृति, परंपरा व धर्मांधता के घेरे से वह बाहर नहीं निकल सकी।

स्त्री विमर्श हिन्दी साहित्य में सर्वत्र दिखाई देता है। चाहे वह गद्य हो या पद्य। कथा साहित्य में विभिन्न उपन्यासकारों एवं कथाकारों ने स्त्री जीवन का लेखा–जोखा अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। विभिन्न कहानीकारों जैसे–मन्नु भंडारी, सुभद्राकुमारी चौहान, चित्रा मुदगल, उषा प्रियंवदा, मालती जोशी, मैत्रेयी पुष्पा, आदि कहानीकारों ने स्त्री जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म पहलुओं का चित्रण किया है। ये सभी लेखिकाएं स्त्री होने के कारण स्त्री की समस्याओं को बारिकी से महसूस की होंगी शायद इसी कारण से स्त्री जीवन की कठिनाइयों को अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत कर सकी हैं। ऐसा नहीं है कि सिर्फ स्त्री रचनाकारों ने ही स्त्री जीवन की समस्याओं का लेखा–जोखा प्रमाणिकता के साथ अभिव्यक्त किया है बल्कि पुरुष रचनाकार भी इसमें पीछे नहीं रहे। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश, यशपाल, जैनेन्द्र, कमलेश्वर, संजीव, ओमप्रकाश वाल्मीकि आदि अनेक लेखकों ने स्त्री के विविध रूपों को उसके जीवन की विद्रुपताओं के साथ प्रस्तुत किया है।

'सबिया' महादेवी वर्मा द्वारा रचित स्त्री जीवन पर केन्द्रित रेखाचित्र है। महादेवी वर्मा छायावाद की आधारस्तम्भ कवयित्री हैं। उनका गद्य और पद्य दोनों पर समान अधिकार है। महादेवी का साहित्य शोषण के विरूद्ध आवाज उठाता है। विशेष कर स्त्री शोषण के विरूद्ध। सबिया एक दीन–हीन–मलीन स्त्री के संघर्षमय जीवन की करुण कहानी है। 'सबिया' का स्त्री होना ही सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। ऊपर से वह दलित है। 'सबिया' पौराणिक 'सावित्री' का अपभ्रंश है। परन्तु उसका पति सत्यवान न होकर मैकू नामक एक निरर्थक व्यक्ति है। इस 'निकृष्ट हरिजन' को 'दयार्द्र आर्यत्व' द्वारा यह तद्भव संज्ञा प्रदान की गई है। लेखिका की उक्ति है कि "उसके स्वर्गतः परंतु यथार्थ में नरकगत माता–पिता चतुर पाकेटमार के समान सबकी आँख बचाकर इस नामनिधि को उड़ा लाए।"[1]

सबिया में पारंपरिक मातृत्व एवं पति परमेश्वर की रूढ़िवादि तथा शोषित परंपरा को बखूबी चित्रित किया गया है। जब 'सबिया' सौरी में थी तभी उसका पति उसे छोड़कर चला गया। वह दुःख में बीमार पड़ जाती है। मार्मिक दृश्य देखिए–'उसका पति उसे बिना बताए परदेश चला गया है। वह तब सौरी में थी, दुःख से बीमार पड़ गयी और इस प्रकार जिस बंगले में नौकर थी, वहाँ दूसरी

मेहतरानी आ गई। यहाँ काम मिल जाये तो बच्चे पल जाएँ। तन–मन से काम करने के संबंध में उसके आश्वासन की अपेक्षा कर मैंने उस छोटी सी गठरी पर संदेह भरी दृष्टि डालकर प्रश्न किया–इसे लेकर कैसे काम होगा? सबिया ने जब उस मैली, दुबली बालिका की पीठ पर हाथ फेरते हुए बड़े विश्वास से सिर हिला–हिलाकर, भाई की देख–रेख के विषय में उसकी असाधारण पटुता की व्याख्या सोदाहरण आरम्भ की, तब मैं न हँस सकी और न मुस्कुराहट रोक सकी।"[2]

सबिया का जीवन निराश्रयता, स्वावलंबन और आत्मविसर्जन का उत्कृष्ट उदाहरण है। वह भारतीय सामाजिक व्यवस्था में शोषण का शिकार है। आलोच्य रेखाचित्र सबिया के माध्यम से स्त्रियों के त्रासदी भरे जीवन के यथार्थ को दर्शाने का प्रयास किया गया है। 'सबिया' का पति अपने जाति भाई की नई वधु को लेकर न जाने कहाँ चल दिया और वह भी ऐसे समय में जब सबिया तीन दिन के शिशु को लिए पड़ी थी। उसके बाद भी सबिया ने उसकी उम्मीद नहीं छोड़ी परन्तु उसका कोई समाचार भी नहीं मिला। वह दूसरा घर न बसाने की प्रतिज्ञा करती है और अपने बच्चों को लेकर, अपनी जीविका चलाने के लिए काम पर लग जाती है। ऐसे में वह 'झक्की' भी कही जाती है परन्तु लेखिका को उसके काम करने के धुन के अतिरिक्त किसी प्रकार की झक का पता न चला। "वह अपने बच्चे को नीम तले कंकरीली धरती पर छोटा मैला कपड़ा डालकर लिटा देती और कुछ निगरानी करने और कुछ मक्खियाँ उड़ाने के लिए बचिया को बैठा, आप तार–तार पिछौरी से कमर कसकर झाड़ू संभालती।"[3]

सबिया इस तरह बच्चे की देख–रेख करती हुई 'माता आपन–आपन भाग' की पारंपरिक सोच के साथ न केवल अपने बच्चों का पालन पोषण करती है बल्कि पति की अंधी माँ को वह बिना खाना खिलाए, खुद नहीं खाती। अन्य कर्मचारियों के व्यंग्य के तिक्तता को भी सहन करती है। भूख से लड़ते हुए छोर में बंधी रोटी का टुकड़ा लिए वह जीवन मरण से संघर्ष करती रहती है। "पर दुःखी और दुर्बल स्त्री पर दो–दो बच्चों के साथ अंधी माँ का भार लादने वाले मैकू पर लेखिका का मन झल्ला उठा।"[4]

मैकू आया तो गेंदा को लेकर उस पर वह कभी न सबिया का सुख–दुःख पूछा, न बच्चों की ओर देखा। अब सबिया पर भार भी बढ़ गया। उसका पति मैकू जब लौट आता है तब वह उसकी सेवा सत्कार में खो जाती है। उसे लगता है कि पति को कोई दिक्कत न हो। वह उसके सुख की चिंता करने लगती है परन्तु मैकू जब उसकी रेशम की साड़ी उतारकर अपनी दूसरी स्त्री गेंदा को दे देता है तब वह टूट जाती है। पुरुष भी विचित्र होता है। अपने छोटे–से–छोटे सुख के लिए स्त्री को बड़ा–से–बड़ा दुःख दे डालता है और ऐसी निश्चिन्तता के साथ मानों वह स्त्री को उसका प्राप्य ही दे रहा है। समाज में विवाह को सामाजिक संस्कार का दर्जा दिया जाता है। जिसके पीछे समाज का यही मकसद रहा है कि स्त्री–पुरुष दोनों में नैतिक संबंध स्थापित हो सके।

परन्तु हमारे समाज की यह विडंबना है कि नैतिकता का यह पाठ सिर्फ स्त्रियों को ही सिखाया जाता है। रेखाचित्र सबिया आज भी प्रासंगिक है। अब भी प्रताड़ित और शोषित स्त्रियां संघर्ष करती दिख पड़ती हैं। निम्नवर्गीय स्त्रियां जीवन भर समाज में शारीरिक तथा मानसिक शोषण का शिकार होती हैं और उसकी पूरी जिन्दगी में स्त्री होने की नकारात्मक छवि सदैव बनी रहती है।

पति दूसरी स्त्री लेकर आया है इसलिए सबिया पंचों को रोटी देने के लिए अपना पेशगी वेतन ले जाती है और अपनी हँसूली बेचकर काम चलाती है। पड़ोस में चोरी होने पर विपत्ति आती है फिर भी वह चोर पत्नी हताश नहीं होती है। सबिया का जीवन पौराणिक नारीत्व के बहुत करीब है परंतु उसके जीवन की कोई सीमा रेखा नहीं। महादेवी वर्मा स्वयं कहती हैं– "ये घटनाएं एक युग पुरानी, पर करुणा से भीगी हैं।"[5] आलोच्य कृति में भारतीय समाज में स्त्री जीवन में व्याप्त दुःख, दैन्य और उत्पीड़न को शब्दों की रेखाओं में चित्रित किया गया है साथ ही यह रचना पुरुष मानसिकता की पोल भी खोलती है।

डॉ. अम्बेडकर ने दलित महिलाओं के सम्मेलन में महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा था कि–"अगर तुम्हारा पति शराब पीकर आता है तो उसे लकड़ी से पीटो, उसे रोटी मत दो। खुद भूखे रहो पर अपने बच्चों को पढ़ाओ। शिक्षा प्राप्ति से ही तुम इस अवस्था से उपर उठोगी।"[6] परंतु क्या इस पुरुष सत्तात्मक समाज में जहाँ स्त्रियों के लिए सारे नियम पुरुषों के द्वारा बनाए गए हैं वहाँ एक दीन–हीन स्त्री के लिए ऐसा कर पाना संभव है? आज भी स्त्रियाँ किस हद तक शारीरिक और मानसिक शोषण की शिकार हो रही हैं उसे शब्दों में कह पाना असंभव है। मैथिलिशरण गुप्त ने यूँ ही नहीं कहा है– "अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी.....।"

संदर्भ

1. सं. उपाध्याय,डॉ. राजकुमार, हिन्दी गद्य विधायन, संजय बुक सेंटर, वाराणसी,प्रथम संस्करण–2010,पृ–39
2. सं. उपाध्याय,डॉ. राजकुमार, हिन्दी गद्य विधायन, संजय बुक सेंटर, वाराणसी,प्रथम संस्करण–2010,पृ–39
3. सं. उपाध्याय,डॉ. राजकुमार, हिन्दी गद्य विधायन, संजय बुक सेंटर, वाराणसी,प्रथम संस्करण–2010,पृ–40
4. सं. उपाध्याय,डॉ. राजकुमार, हिन्दी गद्य विधायन, संजय बुक सेंटर, वाराणसी,प्रथम संस्करण–2010,पृ–41
5. दीक्षित, सूर्यप्रसाद, महादेवी का गद्य, राधाकृष्ण प्रकाषन, प्रकाषन वर्ष–1969,पृ–18
6. भंडारे , डॉ. सुकुमार, हिन्दी कहानी : आदि से आज तक , अमन प्रकाषन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2015,पृ–176

सहायक प्राध्यापक हिन्दी
राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अंबिकापुर जिला–सरगुजा, छत्तीसगढ़